Scientific Innovation Magazine
ISSN : 2584-1157

जलवायु संकट और कृषि में "महिला सहभागिता: चुनौतियाँ, प्रभाव और समाधान

अवन्तिका अवस्थी[1], डॉ. अंजना सिंह[2], डॉ. मुक्ता सूर्या[3]

[1]शोध छात्रा, [2]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग

[3]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग

नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

***ईमेल: awasthiavantika9548@gmail.com**

सारांश

जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय में वैश्विक कृषि प्रणाली के लिए एक गंभीर चुनौती बनकर उभरा है। तापमान वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और अन्य चरम मौसमी घटनाएँ कृषि उत्पादन, खाद्य सुरक्षा तथा ग्रामीण आजीविका को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही हैं। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में इसका प्रभाव विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों पर अधिक देखा जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वे उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण, पशुपालन तथा घरेलू पोषण प्रबंधन में सक्रिय योगदान देती हैं।

यह अध्ययन जलवायु संकट के संदर्भ में कृषि में महिलाओं की भागीदारी, उनके समक्ष उपस्थित सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों तथा जलवायु परिवर्तन के विशिष्ट प्रभावों का विश्लेषण करता है। भूमि स्वामित्व, वित्तीय संसाधनों, तकनीकी जानकारी और सरकारी योजनाओं तक सीमित पहुँच के कारण महिलाएँ जलवायु जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील रहती हैं। इसके बावजूद महिलाओं के पारंपरिक कृषि ज्ञान, सामुदायिक सहयोग और संसाधन प्रबंधन की क्षमता जलवायु-स्मार्ट कृषि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अतः आवश्यक है कि कृषि और जलवायु नीतियों में लैंगिक दृष्टिकोण को शामिल करते हुए महिलाओं को प्रशिक्षण, संसाधनों और निर्णय-निर्माण में समान अवसर प्रदान किए जाएँ, जिससे कृषि

प्रणाली अधिक टिकाऊ और जलवायु-अनुकूल बन सके।

परिचय

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जलवायु संकट मानव सभ्यता के अस्तित्व से जुड़ा हुआ प्रश्न बन चुका है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात से पृथ्वी के औसत तापमान में लगभग 1.1 से 1.3 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि दर्ज की जा चुकी है, और वर्ष 2023 तथा 2024 को अब तक के सबसे गर्म वर्षों में गिना गया। 2025 की प्रारंभिक जलवायु रिपोर्टों ने यह संकेत दिया है कि यदि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की वर्तमान दर जारी रहती है, तो 2030 के दशक तक तापमान वृद्धि 1.5°C की सीमा को पार कर सकती है। यह स्थिति विशेष रूप से कृषि क्षेत्र के लिए अत्यंत चिंताजनक है, क्योंकि कृषि प्राकृतिक संसाधनों, वर्षा, तापमान और मौसमी चक्रों पर निर्भर करती है।

भारत जैसे देश में, जहाँ लगभग आधी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव बहुआयामी हैं। इस संदर्भ में महिलाओं की भूमिका विशेष महत्व रखती है, क्योंकि ग्रामीण कृषि व्यवस्था में महिलाएँ उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण, पशुपालन तथा पोषण प्रबंधन की केंद्रीय धुरी हैं। 2026 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा "महिला किसान वर्ष" घोषित किया जाना इस बात का प्रमाण है कि वैश्विक समुदाय अब कृषि में महिलाओं की निर्णायक भूमिका को औपचारिक मान्यता दे रहा है।

कृषि और जलवायु परिवर्तन के बीच के इस जटिल संबंध में महिलाओं की भूमिका, उनकी आजीविका, सामाजिक उत्तरदायित्व और आर्थिक स्थिति गहराई से प्रभावित होती है। बदलते मौसम के कारण उत्पन्न जोखिम न केवल कृषि उत्पादन को प्रभावित करते हैं, बल्कि महिलाओं के जीवन-स्तर, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा को भी चुनौती देते हैं।

जलवायु संकट की प्रकृति और वर्तमान स्थिति (2025–26 परिप्रेक्ष्य)

जलवायु संकट केवल तापमान वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वर्षा के अनियमित वितरण, समुद्र स्तर में वृद्धि, चरम मौसमी घटनाओं की तीव्रता और जैव विविधता ह्रास जैसे व्यापक परिवर्तनों का समूह है।

2025 की अंतरराष्ट्रीय जलवायु रिपोर्टों के अनुसार विश्व स्तर पर चरम मौसम घटनाओं में पिछले दो दशकों में लगभग दोगुनी वृद्धि हुई है। दक्षिण एशिया को जलवायु संवेदनशील क्षेत्रों में सर्वाधिक जोखिमग्रस्त माना गया है।

भारत में 2024–25 के दौरान कई राज्यों में हीटवेव की अवधि सामान्य से अधिक रही, जबकि कुछ क्षेत्रों में अल्पावधि में अत्यधिक वर्षा ने फसल क्षति को बढ़ाया। कृषि मंत्रालय के प्रारंभिक आकलनों के अनुसार 2024 में लगभग 4 मिलियन हेक्टेयर से अधिक फसलें जलवायु-जनित आपदाओं से प्रभावित हुईं। इसके अतिरिक्त, भूजल स्तर में गिरावट और जल संसाधनों का असंतुलित उपयोग कृषि स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है।

कृषि पर जलवायु संकट का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादकता में गिरावट का अनुमान 2050 तक 10 से 30 प्रतिशत तक लगाया जा रहा है, विशेषकर गेहूँ, धान और मक्का जैसी प्रमुख फसलों में। तापमान वृद्धि के कारण गेहूँ की पैदावार में कमी देखी गई है, क्योंकि उच्च तापमान दाने के भराव को प्रभावित करता है। मानसून की अनिश्चितता के कारण बुवाई चक्र में बदलाव आया है, जिससे उत्पादन लागत बढ़ी है और आय अस्थिर हुई है।

छोटे और सीमांत किसान, जो भारत में कुल किसानों का लगभग 85 प्रतिशत से अधिक हिस्सा हैं, जलवायु संकट के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। आय में गिरावट के कारण ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिरता कमजोर होती है, जिसका प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण पर पड़ता है। जलवायु-जनित प्रवासन की प्रवृत्ति भी बढ़ी है, जिससे कृषि का "नारीकरण" और अधिक स्पष्ट हुआ है—अर्थात पुरुषों के पलायन के बाद कृषि की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ रही है।

कृषि में महिलाओं की वर्तमान स्थिति और भागीदारी

2025 के श्रम सर्वेक्षणों के अनुसार भारत में ग्रामीण महिला कार्यबल का लगभग 40–42 प्रतिशत हिस्सा

कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों में संलग्न है। महिलाएँ खेत की तैयारी, बीज चयन, रोपाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन तथा खाद्य प्रसंस्करण जैसे कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। विकासशील देशों में खाद्य उत्पादन का 60 प्रतिशत तक योगदान महिलाओं द्वारा किया जाता है।

इसके बावजूद भूमि स्वामित्व में महिलाओं की हिस्सेदारी सीमित है, जो लगभग 13–15 प्रतिशत के आसपास है। भूमि पर अधिकार की कमी के कारण महिलाएँ ऋण, बीमा और सरकारी सब्सिडी योजनाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पातीं। यह संरचनात्मक असमानता जलवायु संकट के समय उनकी अनुकूलन क्षमता को कमजोर करती है।

ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था की अदृश्य धुरी: महिला किसान

वैश्विक स्तर पर कृषि श्रमशक्ति में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अनुमानतः विश्व की कुल कृषि श्रमशक्ति का लगभग 40 प्रतिशत से अधिक भाग महिलाओं द्वारा वहन किया जाता है। भारत जैसे विकासशील देशों में, जहाँ आज भी बड़ी जनसंख्या निर्वाह कृषि पर निर्भर है, वहाँ महिलाएँ खेतों में श्रमिक, स्व-रोज़गार कृषक और पारिवारिक कृषि सहायक के रूप में अहम भूमिका निभाती हैं।

राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के अनुसार भारत में बड़ी संख्या में कृषक परिवार ऐसे हैं जिनकी जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों के बढ़ते पलायन के कारण कृषि का नारीकरण तेज़ी से बढ़ रहा है, जिससे महिलाओं की भूमिका पहले से कहीं अधिक निर्णायक बन गई है।

महिलाएँ बीज बोने, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, कटाई और कटाई-पश्चात कार्यों के साथ-साथ पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण और स्थानीय विपणन गतिविधियों में भी सक्रिय रहती हैं। इस प्रकार कृषि मूल्य श्रृंखला के लगभग हर चरण में उनकी सहभागिता दिखाई देती है।

जलवायु संकट का महिलाओं पर विशिष्ट प्रभाव

जलवायु संकट महिलाओं पर बहुआयामी प्रभाव डालता है। जल स्रोतों के सूखने से उन्हें अधिक दूरी तय करनी पड़ती है, जिससे समय और श्रम दोनों बढ़ते हैं। चरम तापमान और पोषण असुरक्षा महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। गर्भवती महिलाओं के लिए हीटवेव और जलजनित रोग

अतिरिक्त जोखिम उत्पन्न करते हैं।

आर्थिक दृष्टि से फसल क्षति और आय में गिरावट का बोझ महिलाओं को अधिक उठाना पड़ता है, क्योंकि वे घरेलू प्रबंधन और खाद्य वितरण की जिम्मेदारी निभाती हैं। जलवायु-जनित आपदाओं के समय सामाजिक सुरक्षा तंत्र की कमी उन्हें और अधिक असुरक्षित बनाती है।इसके अलावा, जल संकट महिलाओं की दैनिक ज़िम्मेदारियों को और कठिन बना देता है। जल संग्रहण, सिंचाई और घरेलू उपयोग के लिये जल की कमी उनके समय, स्वास्थ्य और उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। चरम तापमान और जलवायु-संबंधी रोग महिलाओं, विशेषकर गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिये गंभीर स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न करते हैं।

जलवायु-स्मार्ट कृषि में महिला नेतृत्व की संभावनाएँ

महिलाओं के पास पारंपरिक कृषि ज्ञान का विशाल भंडार है, जिसमें स्थानीय बीज संरक्षण, मिश्रित खेती, जैविक खाद निर्माण और जल संरक्षण तकनीकें शामिल हैं। जलवायु-स्मार्ट कृषि (Climate Smart Agriculture) की अवधारणा में उत्पादकता वृद्धि, अनुकूलन क्षमता और उत्सर्जन में कमी तीनों को संतुलित करने पर बल दिया जाता है।

2025 में विभिन्न राज्यों में महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा संचालित सामुदायिक खेती मॉडल ने सूखा-सहिष्णु किस्मों, ड्रिप सिंचाई और फसल विविधीकरण के माध्यम से बेहतर परिणाम दिए हैं। कई क्षेत्रों में महिला किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) ने सामूहिक विपणन और मूल्य संवर्धन के माध्यम से आय में 15–20 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की है।

नीतिगत हस्तक्षेप और 2025–26 की पहलें

भारत में राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC) और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी योजनाओं को लैंगिक दृष्टिकोण से मजबूत करने की आवश्यकता है। महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (MKSP) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के अंतर्गत लाखों महिलाओं को संगठित किया गया है।

2026 को "महिला किसान वर्ष" के रूप में मनाने की वैश्विक पहल का उद्देश्य महिलाओं की भूमिका को नीतिगत प्राथमिकता देना है। इस अवसर पर जलवायु अनुकूल तकनीकों, डिजिटल कृषि सेवाओं और

वित्तीय समावेशन को महिलाओं तक पहुँचाने पर विशेष बल दिया जा रहा है।

भविष्य की दिशा और रणनीतियाँ

जलवायु संकट से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए आवश्यक है कि कृषि नीतियों में लैंगिक समानता को केंद्र में रखा जाए। महिलाओं को भूमि अधिकार, कृषि प्रशिक्षण, मौसम पूर्वानुमान सूचना, डिजिटल प्लेटफॉर्म और बाजार तक सीधी पहुँच प्रदान करनी होगी।

फसल विविधीकरण, कृषि वानिकी, जल संचयन संरचनाएँ और सामुदायिक बीज बैंक जैसे उपाय दीर्घकालिक समाधान प्रदान कर सकते हैं। यदि महिलाओं को निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में समान भागीदारी दी जाए, तो कृषि प्रणाली अधिक लचीली और टिकाऊ बन सकती है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिये महिलाओं को अनुकूलन रणनीतियाँ अपनाने हेतु सक्षम बनाना आवश्यक है। फसल विविधीकरण, जलवायु-सहिष्णु फसलों का चयन और आय के वैकल्पिक स्रोत विकसित करना इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को जल-कुशल सिंचाई, मृदा संरक्षण और कृषि वानिकी जैसी तकनीकों की जानकारी दी जानी चाहिये। साथ ही, समय पर और सटीक मौसम जानकारी तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना भी अनिवार्य है।

वित्तीय समावेशन के तहत महिलाओं को ऋण, बीमा और सूक्ष्म-वित्त सेवाओं से जोड़ना जलवायु जोखिमों के विरुद्ध उनकी आर्थिक सुरक्षा को मजबूत कर सकता है। महिला स्वयं सहायता समूह इस संदर्भ में प्रभावी सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा तंत्र के रूप में कार्य कर सकते हैं।

नीति स्तर पर भूमि अधिकार, संसाधन पहुँच और निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना दीर्घकालिक समाधान प्रदान कर सकता

निष्कर्ष

जलवायु संकट और कृषि के बीच का संबंध अत्यंत गहरा और जटिल है। कृषि में महिलाओं की भूमिका केवल श्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि वे खाद्य सुरक्षा, पोषण, सामुदायिक स्थिरता और पारंपरिक ज्ञान की

संरक्षक हैं। 2025–26 के नवीनतम आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, किंतु संसाधनों और नेतृत्व में असमानता अभी भी बनी हुई है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने की रणनीतियाँ तब तक प्रभावी नहीं हो सकतीं जब तक उनमें महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं और भूमिकाओं को केंद्र में न रखा जाए। लैंगिक-संवेदनशील नीतियाँ, संसाधनों तक समान पहुँच और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ही कृषि क्षेत्र को अधिक संवहनीय और जलवायु-प्रत्यास्थ बना सकती हैं।

कृषि में महिलाओं के योगदान को पहचानना और जलवायु संकट के संदर्भ में उनके सशक्तिकरण को प्राथमिकता देना न केवल सामाजिक न्याय की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि यह भविष्य की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण स्थिरता के लिये भी अनिवार्य है।यदि महिलाओं को सशक्त बनाकर जलवायु-स्मार्ट कृषि रणनीतियों में केंद्रीय स्थान दिया जाए, तो न केवल कृषि उत्पादन में स्थिरता आएगी बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा भी सुदृढ़ होगी। अतः जलवायु संकट के समाधान में महिला सहभागिता को प्राथमिकता देना समय की अनिवार्य मांग है।

संदर्भ

- खाद्य और कृषि संगठन. (2022). *द स्टेट ऑफ फूड एंड एग्रीकल्चर 2022: कृषि-खाद्य प्रणालियों के परिवर्तन हेतु कृषि में स्वचालन का उपयोग.* रोम: एफएओ।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद. (2023). *भारत में जलवायु-सहिष्णु कृषि.* नई दिल्ली: आईसीएआर।
- जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल. (2023). *जलवायु परिवर्तन 2023: समेकित रिपोर्ट.* जिनेवा: आईपीसीसी।
- अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन. (2024). *अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाएँ और पुरुष: एक सांख्यिकीय अद्यतन.* जिनेवा: आईएलओ।

- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय. (2024). *एग्रीकल्चरल स्टैटिस्टिक्स एट ए ग्लांस 2024*. भारत सरकार, नई दिल्ली।
- पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय. (2023). *राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC)*. भारत सरकार, नई दिल्ली।
- ग्रामीण विकास मंत्रालय. (2024). *राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) वार्षिक प्रतिवेदन.* भारत सरकार, नई दिल्ली।
- नीति आयोग. (2023). *भारत में जलवायु परिवर्तन और कृषि.* भारत सरकार, नई दिल्ली।
- संयुक्त राष्ट्र. (2025). *लैंगिक समानता और जलवायु कार्रवाई रिपोर्ट.* न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र।
- विश्व बैंक. (2021). *कृषि में महिलाएँ: जलवायु-स्मार्ट कृषि के लिए परिवर्तन की एजेंट.* वाशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक।